ड्रैग्न सम्राट

सुवर्ण सम्राट

चीन के मध्य में माउंट ताइ स्थित है.
पाँच रंगों के बादल
इस विशाल पहाड़ को घेरे रहते हैं
और पीली, लाल, काली, नीली और श्वेत
नदियाँ इसकी ढलानों से नीचे बहती रहती हैं.
इस पहाड़ पर हर ओर फैले घने जंगलों में
अनोखे जानवर रहते हैं.
पेड़ों के ऊपर विलक्षण पक्षी उड़ते रहते हैं
और पहाड़ी नदियों में
अद्भुत मछलियाँ तैरती रहती हैं.

माउंट ताइ कई देवताओं
और देवियों का
निवास स्थान भी है.
उनके चेहरे मानवों जैसे हैं
और शरीर सर्पों जैसे.
और उनकी लंबी पूँछें घूम कर
उनके सिरों तक पहुँच जाती हैं.
उस पहाड़ पर पाये जाने वाले
श्याम-श्वेत जेड ही वह खाते हैं.

बहुत समय पहले माउंट ताइ पर एक रात
एक माँ ने एक सुवर्ण ड्रैग्न को जन्म दिया.
उस के चार चेहरे थे-
एक चेहरा सामने था और एक पीछे,
एक चेहरा बाईं ओर था और एक दाईं ओर.
यही शिशु सुवर्ण सम्राट था.
कुछ ही दिनों में वह शिशु बोलने लगा
और झटपट बड़ा होने लगा.
सुवर्ण सम्राट अपने देश का
एक महान नायक बना.
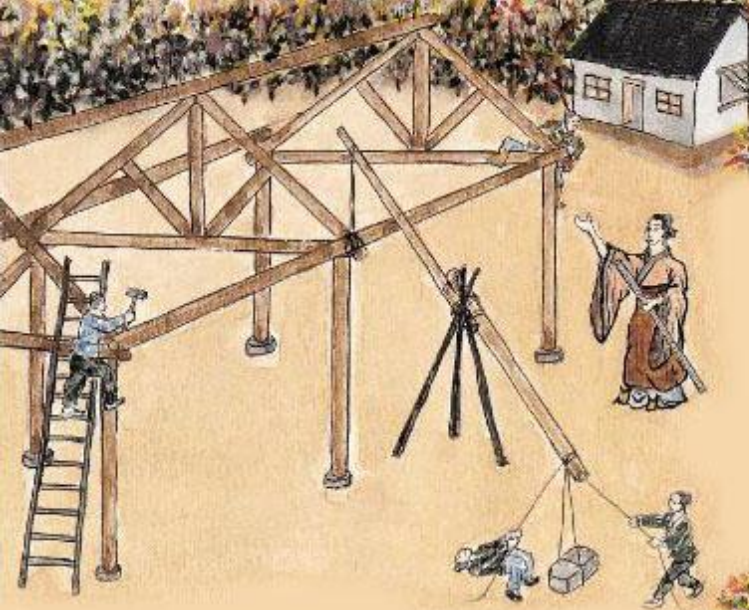
उसने लोगों को यह भी बतलाया कि
कुएं कहाँ खोदते हैं
और घर कैसे बनाते हैं.
सुरक्षित घरों में रहते हुए,
पका हुआ भोजन खा कर
और साफ पानी पीकर
उसके लोग स्वस्थ
और बलवान बन गए.

सुवर्ण सम्राट
सिर्फ एक न्यायप्रिय शासक ही नहीं था,
वह एक आविष्कारक भी था.
उसने लोगों को कच्चे खाने को
आग पर पकाना सिखाया.
खाना पकाने के कार्य को
सरल बनाने के लिए
उसने कड़ाई का आविष्कार किया.

सम्राट ने उन अधिकारियों को
प्रोत्साहित किया
जो नये आविष्कार कर रहे थे.
उसके नेतृत्व में लोगों ने
सूर्य, चंद्रमा और तारों का
अध्ययन किया.

उन्होंने भाषा का और
चीनी वर्णमाला का आविष्कार किया.
इस आविष्कार का उपयोग कर
उन्होंने नियम-कानून लिखे
और कैलेंडर की रचना की.
उन्होंने इतिहास और
औषधियों के विषय में लिखा.
उन्होंने विज्ञान और कला के बारे में लिखा.
सुवर्ण सम्राट के राज्य में
लोगों का जीवन बहुत ही सुखद था.

लेकिन राज्य की शांति प्राय:
भंग हो जाती थी
जब पड़ोस के कबीले आक्रमण करते थे.
अपने देश और प्रजा की रक्षा करने के लिए
सुवर्ण सम्राट को युद्ध करना पड़ता था.
अपने शत्रुओं का सामना करने के लिए
उसने बादलों और वर्षा को इकट्ठा किया.
उसने पशु और पक्षियों को
अपनी सहायता के लिए बुलाया.

अपने सैनिकों को लड़ाई में सक्षम
बनाने के लिए सुवर्ण सम्राट ने
कई आविष्कार किये. उसने रथ बनाये
ताकि सेना तेज़ी से आगे बढ़ सके.
उसने युद्ध-ध्वजों की रचना की
ताकि दूर-दूर तक उसके सैनिक
अपने सेनापतियों के आदेशों का
समझ कर पालन कर सकें.

भयंकर ड्रैग्न

सुवर्ण सम्राट के महान योद्धाओं में से
एक था भयंकर ड्रैग्न,
जिसका नाम था ची यू.
वह सुवर्ण सम्राट का सारथी और
उसके राज-दरबार का सर्वोच्च मंत्री था.
वह देश के नौ शक्तिशाली कबीलों का
नायक भी था. ची यू के सींगदार,
लोहे के सिर में चार आँखें थीं
और उसके शल्की शरीर में
छह बाँहें थीं.
वह वर्षा और तूफान का
आह्वान कर सकता था.
युद्ध में शत्रुओं का नाश करने के लिए
वह अपनी इन शक्तियों का
उपयोग करता था.
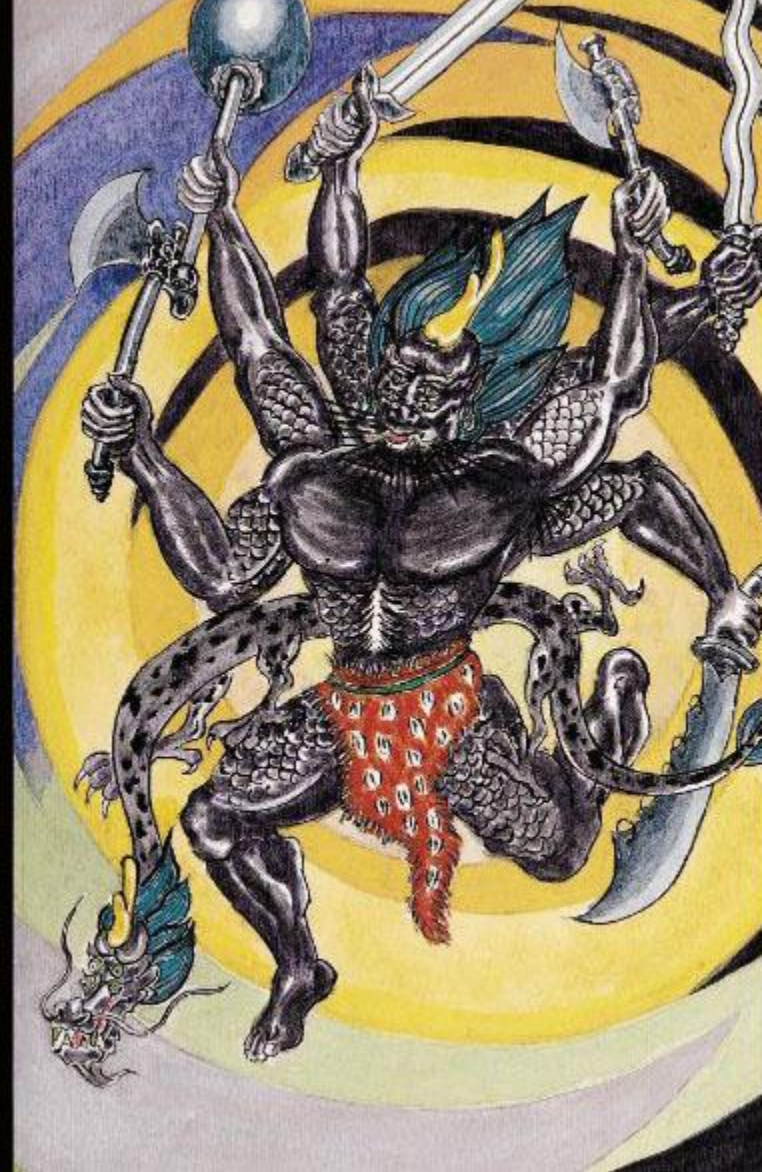
चो यू के इक्यासी भाई थे
और वह सब उसके जैसे ही थे.
वह सब भयंकर योद्धा थे
जो घोड़ों की तरह तेज़ दौड़ते थे
और पक्षियों की तरह आकाश में उड़ते थे.

भोजन में वह रेत,
पत्थर और धातु खाते थे.
ची यू और उसके भाई
उस देश के
सबसे खूंखार योद्धा थे.

परंतु जैसे-जैसे उसकी
शक्ति और प्रसिद्धि बढ़ी,
सम्राट के राज-दरबार में
अपनी पदवी से
ची यू अप्रसन्न रहने लगा.
वह स्वयं ही सम्राट बनना चाहता था.
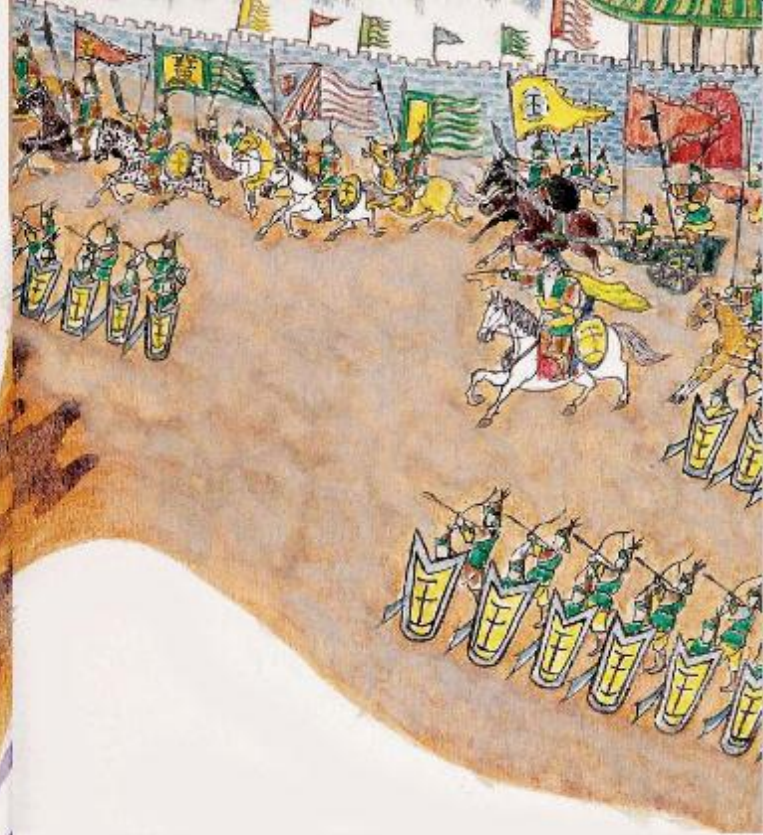
इसलिए उसने अपने इक्यासी
भाइयों को इकट्ठा किया और
सुवर्ण सम्राट पर हमला कर दिया.
सुवर्ण सम्राट और उसकी सेना ने
राजधानी के बाहर उसका सामना किया.
एक लंबा और भयंकर युद्ध शुरु हो गया.

ड्रैग्न, बाघ, शेर और भालू
सुवर्ण सम्राट की सेना में
सम्मिलित हो गए.
फीनिक्स और गरुड़ और बाज़
ध्वजाओं के समान
सेना को रास्ता दिखाने के लिए
युद्धस्थल के ऊपर उड़ने लगे.
सुवर्ण सम्राट की सहायता करने हेतु
देवता झटपट पहाड़ों और नदियों से नीचे आए.

ची यू की सेना में उसके
इक्यासी ड्रैग्न भाई और
हज़ारों भीमकाय योद्धा थे.
उसने अपने सैनिकों को
तलवारें और भाले और फरसे दिये.
उसने उन्हें धनुष और बाण दिये.
यह उस काल के सबसे नये
और शक्तिशाली हथियार थे.

चीं यू सिर्फ एक महान योद्धा ही न था.
वह एक महान जादूगर भी था.
वह अपने जादू से शत्रुओं को
भ्रमित कर सकता था और उनके लड़ने के
संकल्प को नष्ट कर सकता था.

रहस्यमयी धुंध और
अजब शोर उत्पन्न कर
वह शत्रु सैनिकों को
भयभीत कर सकता था.

युद्ध के दौरान ची यू ने युद्धस्थल के
उस भाग में घना कोहरा पैदा कर दिया
जहाँ सुवर्ण सम्राट की सेना थी.
सम्राट की सेना कोहरे में भटक गई.
ची यू के योद्धाओं ने सम्राट की सेना पर
हमला कर दिया और इतने सैनिकों को
मार डाला कि खून की नदी बहने लगी.

सुवर्ण सम्राट और उसके बचे हुए सैनिक,
खाने और पानी के बिना,
तीन दिनों और रातों तक भटकते रहे.
वह शक्तिहीन और व्याकुल थे
और पराजय की कगार पर खड़े थे.

फिर सम्राट के आविष्कारकों में से
एक ने एक अनोखा रथ बनाया.
रथ में एक मूर्ति लगी थी जिसकी
अंगुलि एक ओर संकेत कर रही थी.
रथ चाहे किसी भी दिशा में जाये
मूर्ति की अंगुलि सदा
दक्षिण की ओर संकेत करती थी.

रथ का चालक कभी भटक न सकता था.
यह आविष्कार संसार का
पहला कम्पास था.
इसकी सहायता से सुवर्ण सम्राट की सेना
घने कोहरे में भी आगे बढ़ सकती थी.
उसने ची यू की घेराबंदी को तोड़ डाला
और अपने सैनिकों को सुरक्षित
वापस अपने शिविर ले आया.

तब भी ची यू ने इस युद्ध की
नौ लड़ाइयाँ जीत लीं.
सुवर्ण सम्राट समझ गया कि
ची यू के काले जादू का
सामना करने के लिए
उसे और महान आविष्कारों की ज़रूरत थी.
पहले उसने बैलों और भेड़ों के सींगों से
बिगुल बनाये. जब ची यू भयंकर आवाज़ें
उत्पन्न करता था तब सम्राट के सैनिक
बिगुल बजाते थे.
वह ड्रैग्न की गर्जन जैसी
तेज़ ध्वनि निकालते थे.

इस तरह सम्राट के सैनिकों का साहस
और आत्मविश्वास लौट आया और
वह अपनी पूरी शक्ति लगा कर
ची यू से युद्ध करने लगे.

फिर सुवर्ण सम्राट ने
पूर्वी चीन सागर में
थंडर ड्रैग्न कुई को बंदी बना लिया.
उसने ड्रैग्न की चमड़ी और हड्डियों से
82 जादुई ढोल बनाये.
जब उसके सैनिकों ने वह ढोल बजाये तो
उनकी गरजती आवाज़ धरती पर
हज़ारों मील दूर तक सुनाई दी.
उस आवाज़ की गर्जन से धरती
ऐसे काँप गई कि जैसे
भूचाल आ गया हो.

ची यू के सैनिक ज़मीन पर लुढ़क गये.
भय से काँपते हुए
जब वह सुरक्षित जगहों में
छिपने के लिए धक्का-मुक्की कर रहे थे
तब सुवर्ण सम्राट की सेना ने उन पर
पूरी ताकत लगा कर हमला कर दिया.
थंडर ड्रैग्न की हड्डियों और चमड़ी से
बने जादुई ढोल की सहायता से
सुवर्ण सम्राट ने पहली जीत अर्जित की.
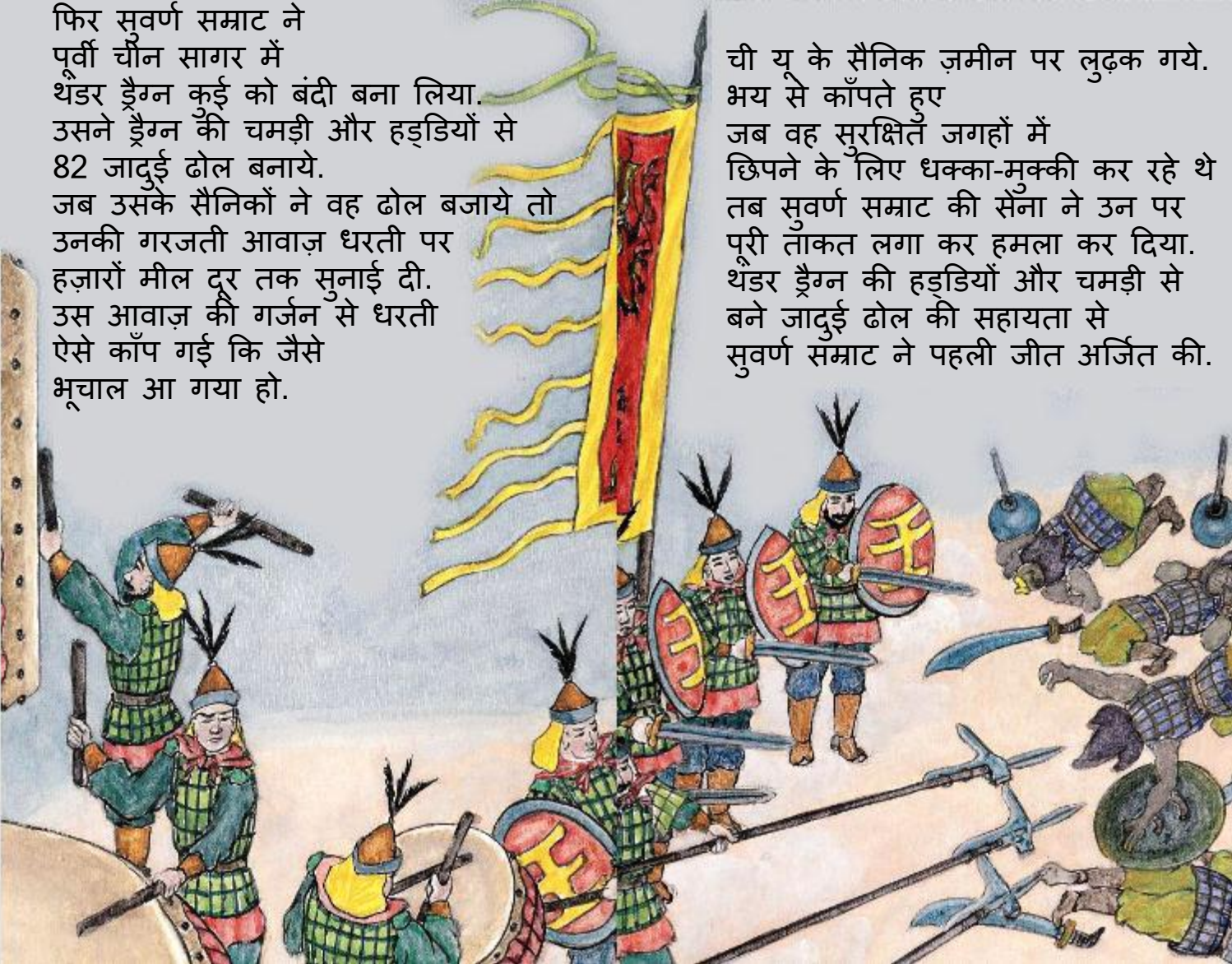
पंखोवाला ड्रैग्न और अकाल की देवी

सुवर्ण सम्राट जानता था कि ची यू को
हराने के लिए उसे और
सहायता की आवश्यकता थी.
इसलिए उसने यिंग लांग से कहा कि
युद्ध में उसका साथ थे.
यिंग लांग पंखोवाला ड्रैग्न था.
वह उड़ सकता था और
बादलों को बुला सकता था.
वह बारिश लाता था और
बाढ़ को रोकने के लिए बाँध बनाता था.

जब सुवर्ण सम्राट ने उससे मदद माँगी तो
यिंग लांग ने एक बाँध बनाया.
उसकी योजना बाँध के पीछे
एक झील बनाने की थी.
बाँध के फाटक खोलने पर
झील का पानी
ची यू के शिविर को डुबो देगा.

लेकिन ची यू ने तुरंत मुकाबला किया.
उसने वर्षा और आँधी के
अपने देवताओं को बुलाया.
बाँध के पूरा होने से पहले ही
उसने सुवर्ण सम्राट के शिविर पर
एक भयंकर अंधड़ भेज दिया.
मूसलाधार बारिश हुई, युद्धस्थल में
बाढ़ आ गई और
कई सैनिक डूब कर मर गए.

अब सुवर्ण सम्राट ने अपनी बेटी बा को सहायता के लिए बुलाया.
बा तीन फुट लंबी
अकाल की देवी थी.
उसकी आँखें उसके बाल-रहित सिर के ऊपर थीं और उसका शरीर सूर्य से भी अधिक गर्मी पैदा करता था.
जब उसके पिता ने उससे मदद मांगी तो वह आकाश से उतर कर नीचे आ गई.
उसका नन्हा शरीर आग के गोले समान जल रहा था.
उसकी गर्मी से भूमि पर बहता सारा पानी सुख गया. अंधड़ रुक गया.
जादू समान सैलाब गायब हो गया.

उसने भयंकर ड्रैग्न के सैनिकों पर
एक के बाद एक,
कई अंधड़ और तूफान फेंके.
इसके पहले कि ची यू की सेना सँभल पाती,
सुवर्ण सम्राट की सेना ने हमला कर दिया.
भयंकर ड्रैग्न पकड़ा गया.
सुवर्ण सम्राट ने आदेश दिया कि
ची यू का वध कर दिया जाये.
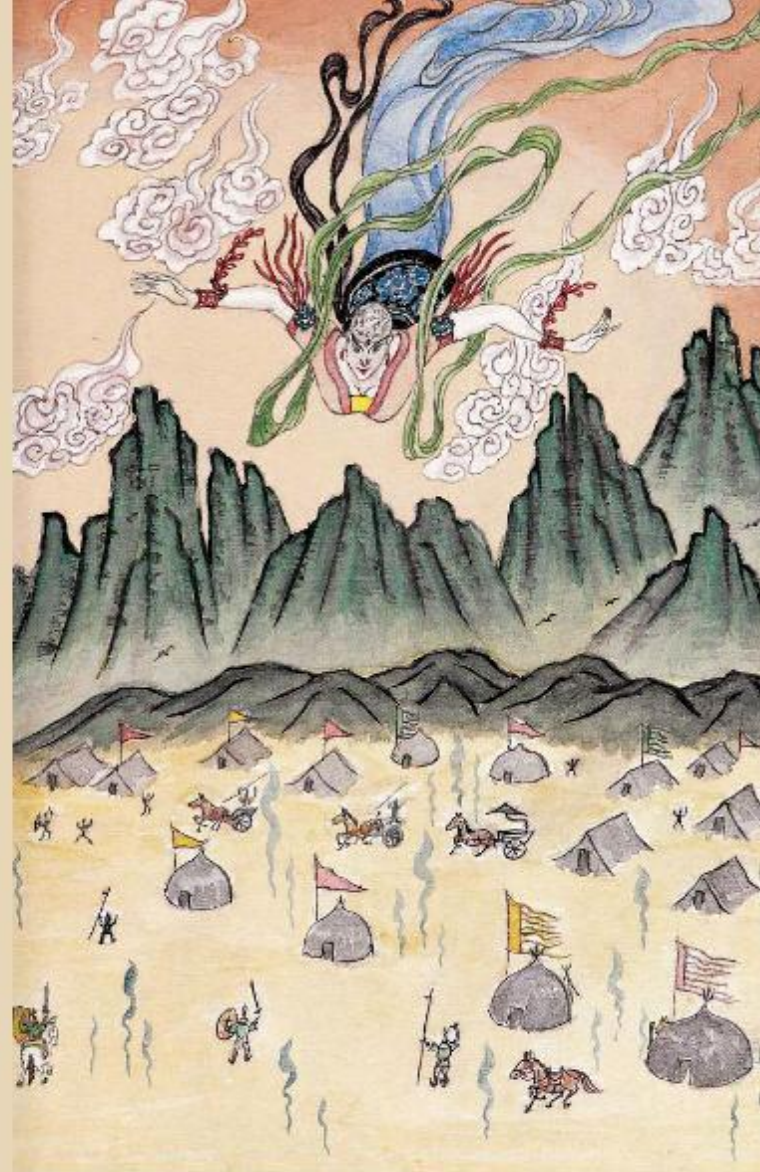
यिंग लांग ने इस अवसर का लाभ उठाया
और बाँध का काम पूरा कर लिया.
उसने बाँध के पीछे की झील को
बारिश के पानी से भर दिया.
फिर उसने बाँध के फाटक खोल दिये
और ची यू का शिविर बाढ़ में डूब गया.
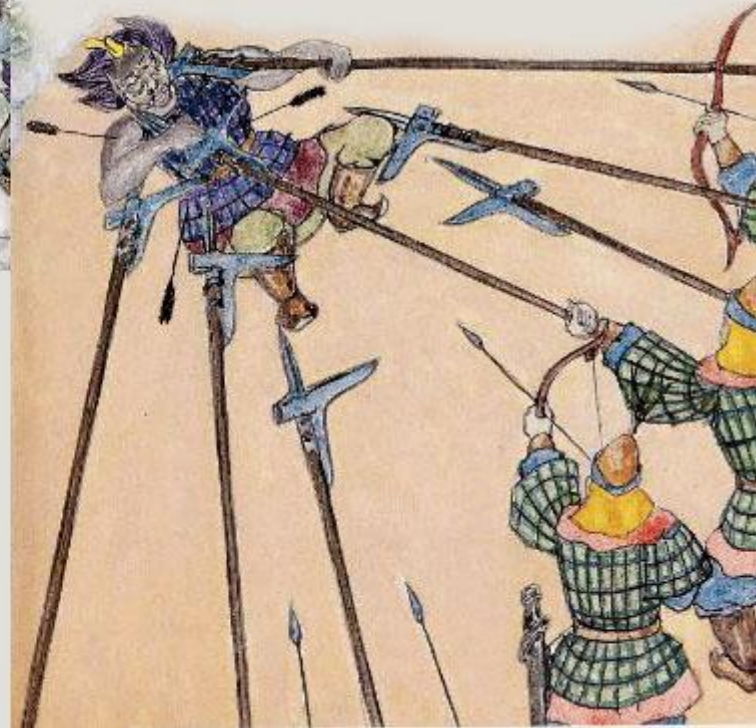
नीले पहाड़ की तलहटी पर
भयंकर ड्रैग्न का सिर काट दिया गया.
उसके योद्धा भाग गये.
कुछ पहाड़ों में जाकर छिप गये,
कुछ सागर पार चले गये.
नीले पहाड़ में भयंकर ड्रैग्न का शव
चिनार के पेड़ों का जंगल बन गया.
हर वर्ष पतझड़ में जब पेड़ों के पत्ते
लाल रंग के हो जाते हैं
और गिरने लगते हैं
तब लोगों को लगता है कि
ची यू के घावों से लहू बह रहा है
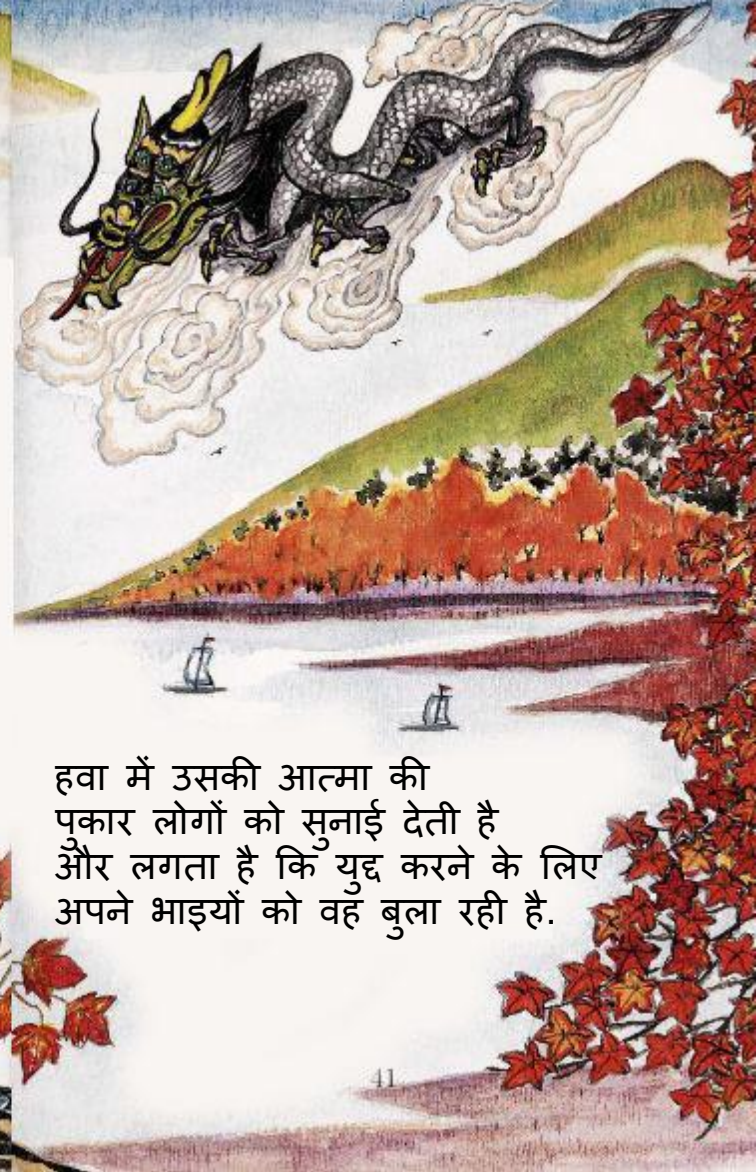
हवा में उसकी आत्मा की
पुकार लोगों को सुनाई देती है
और लगता है कि युद्ध करने के लिए
अपने भाइयों को वह बुला रही है.

मध्य राज्य का सम्राट

चीयू को हरा कर सुवर्ण सम्राट
चीन का एकछत्र सम्राट बन गया.
वह माउंट ताइ से देश पर
शासन करता था. अपने चार चेहरों से
वह संसार को दूर-दूर तक
देख सकता था.
उसे मुख्य सम्राट कहा जाने लगा
और उसके देश को
मध्य राज्य कहा जाता.

युद्ध का समाप्ति पर सुवर्ण सम्राट ने
सैनिकों को आदेश दिया कि सारे भाले
और बाण और फरसे इकट्ठे किये जायें.
उसने हथियारों को पिघलाने का आदेश दिया.
फिर सबसे कुशल कारीगरों से कहा कि
पिघली हुई धातु से एक विशाल तिपाई बनायें.
कारीगरों ने उस तिपाई पर ड्रैग्न और देवता,
जानवर और पक्षी, पौधे और दैत्य तराश कर
बना दिये. उस पर युद्ध के दृश्य अंकित किये
वह चाहते थे कि भविष्य में लोग यह
स्मरण रखें कि युद्ध में क्या हुआ था.

तिपाई का काम पूरा होने पर एक
भव्य समारोह आयोजित हुआ तो
यिन लांग आकाश से नीचे आया.
उसके शरीर और पंखों पर लगे सुनहरी
शल्कों की चमक ने लोगों
को चकाचौंध कर दिया.
पंखोंवाला ड्रैग्न सुवर्ण सम्राट को
दिव्य राज-दरबार में ले जाने के लिए
धरती पर लौट आया था.
वहाँ एकत्र लोग रोने लगे और
धरती पर रहने के लिए
अपने सम्राट से विनती करने लगे,
फिर भी सुवर्ण सम्राट ड्रैग्न की
पीठ पर बैठ कर
आकाश की ओर चला गया और
लुप्त हो गया.

लेकिन सुवर्ण सम्राट की आत्मा और बुद्धिमानी आजतक लोगों को प्रेरित कर रही है.
लोग उसे चीन के सबसे
महान ड्रैग्न के रुप में पूजते हैं.
और चीन के लोग अपने को
सुवर्ण ड्रैग्न की संतान मानते हैं.

अंतिम शब्द

हज़ारों वर्षों से ड्रैग्न चीनी लोक-कथाओं के सबसे शक्तिशाली जीव हैं. पैराणिक कहानियों में ड्रैग्न वह दिव्य जीव हैं जिनके हिरणों के सींग या ऊँट का सिर या भूत की आँखें या साँप की गर्दन या बैल के कान होते हैं. उनके घड़ियाल के पेट, कार्प मछली के शल्क, बाघ के पंजे, और गरुड़ के नाख़ून होते हैं. उन्होंने मुँह में मोती पकड़े होता हैं जो तारों समान चमकते हैं. वह उड़ सकते हैं, तैर सकते हैं और धरती में सुरंग बना सकते हैं. आग और बादल उगलते हुए वह आकाश और धरती और पाताल के बीच सरलता से आ-जा सकते हैं. इन ड्रैग्न की कहानियाँ चीन के सम्राटों और चीन की स्थापना से जुड़ी हुई हैं. सुवर्ण सम्राट जैसे शासक अकसर दावा करते थे कि वह ड्रैग्न थे. वह मनुष्य के रुप में प्रकट हुए थे पर ड्रैग्न के आकार के महल में रहते थे और ड्रैग्न सिंहासन पर बैठते थे और ड्रैग्न वस्त्र पहनते थे.

चीन की संस्कृति में ड्रैग्न का अभी भी बहुत महत्व है. सुवर्ण सम्राट को चीन का संस्थापक माना जाता है. और ची यू के वंशज भी उसकी जादुई शक्तियों को कभी भुला नहीं पाये हैं. उत्सव के समय उसके सम्मान में कुश्ती और मार्शल आर्ट के मुकाबले आयोजित होते हैं. उसके मंदिरों में ध्वजायें हवा में फड़फड़ाती हैं मानो कि युद्ध करने के लिए सैनिकों का वह आह्वान कर रहा था. लेकिन पंखोंवाला ड्रैग्न यिन लांग सबसे अधिक प्रसिद्ध है. नववर्ष के दिन लोग उसके सम्मान में ड्रैग्न नृत्य करते हैं. लोग उसे इस आशा से प्रसन्न करते हैं कि वह वर्षा, धूप और अच्छी उपज का वरदान देगा.

प्राचीन चीन में एक रात एक
अनोखे बच्चे का जन्म होता है.
वह एक सम्राट है और एक ड्रैग्न भी है.
ड्रैग्न सम्राट एक शक्तिशाली शासक बनता है.
लेकिन ची यू नामक योद्धा उससे ईर्षा करता है.
वह सम्राट को पराजित कर
चीन का शासक बनना चाहता है.
क्या सम्राट देश की रक्षा कर पायेगा?
या ची यू विजयी होगा?
यही रोचक कहानी इस पुस्तक में लिखी है.